impact
www.impactmeasurement.co.in

Date : 10-Mar-2009 Edition : Delhi Page No.: 5 Page Name: Delhi Size: 303.2 sq. cm

Sector: Pharma Healthcare and Biotech Circulation: 356842 AVE: Rs.230428.86 Frequency: Daily

Publication: Navbharat Times Title: If pain then change

नवभारत टाइम्स

कॉमन हो गई है रिविजन रिप्लेसमेंट सर्जरी

दर्द है तो बदल डालो

नीतू सिंह ॥ नई दिल्ली

पांच साल पहले तक भारत में प्राइमरी जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जरी ही बहुत रेयर होती थीं, लेकिन अब रिविजन सर्जरी भी काफी कॉमन हो गई है। इसकी वजह रिप्लेसमेंट सर्जरी में इस्तेमाल होने वाली तकनीकों का आसानी से उपलब्ध होना, इसका सस्ता होना और ट्रेंड सर्जनों की संख्या का बढ़ना है। लेकिन लापरवाही के कारण रिविजन सर्जरी के रूप में नई दिक्कतें भी सामने आने लगी हैं। इसके अलावा सपोर्ट के तौर पर इस्तेमाल करने के लिए हमारे पास बोन बैंक भी काफी कम है।

गंगाराम हॉस्पिटल के सीनियर ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. प्रतीक गुप्ता कहते हैं कि 2002 के बाद भारत में जॉइंट रिप्लेसमेंट काफी कॉमन हो गया है। पहले सुविधाएं नहीं थीं और लोग दिक्कत को झेलने को मजबूर थे। मगर अब ऑप्शन उपलब्ध हो जाने से 60 साल के बजाय 35 साल में भी रिप्लेसमेंट होने लगे हैं। मैक्स हेल्थकेयर के सीनियर ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. एल. तोमर कहते हैं कि अगर सही ढंग से सर्जरी हुई हो और सर्जरी के बाद प्रॉपर देखभाल हो तो रिप्लेसमेंट की ऐवरेज लाइफ 20 से 25 साल होती है। डॉ. तोमर कहते हैं कि जॉइंट रिप्लेसमेंट के सफल होने और उसकी लाइफ में इंप्लांट की क्वॉलिटी और मरीज की उम्र का रोल काफी अहम होता है। अगर 50 की उम्र में सर्जरी हुई है तो जॉइंट जीवन भर चल सकता है, लेकिन 35 में की गई तो तीन रिविजन की भी जरूरत पड़ सकती है। सेकंड्री सर्जरी की लाइफ सात साल होगी तो थर्ड की तीन से पांच साल ही होगी।

रिविजन रिप्लेसमेंट की जरूरत क्यों

- प्राइमरी रिप्लेसमेंट का काफी कम उम्र में होना।
- पहले हिप या घुटने के इंप्लांट में प्लास्टिक पार्ट ज्यादा होता था, जिसे पॉलीथाइलीन कहते हैं। यह जल्दी घिस जाता है।
- पहले सीमेंटेड हिप जॉइंट रिप्लेसमेंट ज्यादा होता था, जो सावधानी नहीं बरतने के कारण समय के साथ हड्डी की पकड़ छोड़ देता है और ढीला हो जाता है। कई बार इससे खट-खट की आवाजें भी आने लगती हैं और दर्द भी काफी ज्यादा होता है।
- कई बार इन्फेक्शन या चोट लगने के कारण भी प्राइमरी रिप्लेसमेंट खराब हो जाता है।
- अगर पहली सर्जरी ठीक से न हुई हो, कप खराब हों तो भी जॉइंट लूज हो जाता है। बॉल टेढ़ी लगी होने पर भी दिक्कतें दोबारा लौट आती हैं।

रिविजन सर्जरी के चैलेंज

- रिप्लेसमेंट का खर्च प्राइमरी सर्जरी की तुलना में डेढ़ गुना से ज्यादा होता है।
- रिविजन के समय मरीज की उम्र ज्यादा और हड्डियों की ताकत कम हो चुकी होती है। इसलिए रिस्क ज्यादा होता है।
- घाव के भरने की क्षमता कम होने के कारण इन्फेक्शन का खतरा ज्यादा रहता है।
- इसके लिए काफी अच्छे, आधुनिक इंप्लांट और ट्रेंड सर्जन की जरूरत होती है।

रिप्लेसमेंट के बाद रखें ध्यान

- ज्यादा भाग-दौड़ न करें।
- पैर मोड़कर न बैठें। इससे घुटनों पर काफी प्रेशर पड़ता है और जॉइंट लूज हो सकता है।
- रिप्लेसमेंट के बाद जमीन या छोटे स्टूल पर न बैठें।

रिप्लेसमेंट सर्जरी अब तक

- करीब 10 लाख

प्राइमरी रिप्लेसमेंट में खर्च

- सरकारी हॉस्पिटल में सिर्फ इंप्लांट का खर्च ही लगता है। ऐसे में एक घुटने के रिप्लेसमेंट में 75 से 80 हजार का खर्च आता है। प्राइवेट हॉस्पिटल में दो से ढाई लाख रुपये।

© Navbharat Times